वैशाली (बिहार) में शिक्षण-शिक्षाप्राप्ति की प्रक्रिया का उत्प्रेरण

डॉ सुनीता सिंह

सर्व शिक्षा अभियान [http://mhrd.gov.in/sarva-shiksha-abhiyan], "एजुकेशन फॉर आल", भारतीय सरकार की एक मुख्य योजना है, जिसका उद्देश्य १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए निःशुल्क सार्वभौमिक शिक्षा प्राप्त करना है.

इस योजना का एक मुख्य भाग हर राज्य में ब्लॉक रिसोर्स पर्सन्स (BRPs) और क्लस्टर रिसोर्स सेंटर कोऑर्डिनेटर्स (CRCCs) की स्थापना करना रहा है.

इनकी भूमिका शिक्षकों को अकादमिक मेंटरिंग (परामर्श) और 'ऑनसाइट सपोर्ट' देना है, साथ ही साथ स्थानीय समुदायों को विद्यालयों के संचालन और आम तौर पर 'स्कूल सिस्टम' (विद्यालय प्रणाली) में भाग लेने के लिए संगठित करना भी है.

मगर, इन प्रशंसनीय लक्ष्यों के बावजूद, एक CRCC, श्री धर्मेंद्र कुमार, की निराशा साफ थी: "हम पर दूसरे कार्यों का इतना भार है, हमारे पास कक्षाओं में शिक्षकों की 'प्रैक्टिसेज' का निरीक्षण करने का समय ही नहीं है."

जबकि एक दूसरे CRCC ने बताया: "अगर हमें शिक्षकों को मेंटर करना (परामर्श देना) है, तो हमें खुद नवीनतम साधनों की आवश्यकता होगी."

इन चुनौतियों के समाधान के लिए, बिहार के वैशाली जिले में *सर्व शिक्षा अभियान* के साथ काम करते समय TESS-India ने अपने दो उत्तरदायित्व देखे:

1. शिक्षकों को सीधे विद्यालयों में मेंटर करने की आवश्यकता के प्रति जिला अधिकारियों को संवेदनशील बनाना
2. अपने प्रैक्टिसेज को बेहतर बनाने में शिक्षकों की सहायता करने वाले स्किल-बिल्डिंग एजेंट्स (कौशल को विकसित करने वाले एजेंट्स) के रूप में शिक्षक प्रशिक्षकों की (BRPs और CRCCs दोनों) क्षमता को बढ़ाना.

डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट ऑफ़ एलीमेंट्री ट्रेनिंग (DIET) में मैथ्स मेला (गणित मेला) - मेले जिनका लक्ष्य मॉडल, गीत, नाटक और खेल के प्रयोग से गणित को और आकर्षक बनाना है - के समर्थन ने TESS-India को दोनों कार्य करने का उत्तम अवसर दिया.

उनके व्याख्यान में, हितधारकों के एक क्रॉस-सेक्शन को - जिसमें प्रशासनीय अधिकारी, शिक्षक प्रशिक्षक, शिक्षक, प्रधानाध्यापक, बच्चे, अभिभावक और समुदाय शामिल थे - परिचित कराया गया कि कैसे TESS-India के संसाधन उन्हें अपनी दैनिक प्रैक्टिसेज को बेहतर बनाने में सहायता दे सकते थे.

TESS-India का भाग लेना एक बड़ी सफलता थी और, फलस्वरूप, जिला शिक्षा अधिकारी और DIET प्रिंसिपल, दोनों ने ही BRPs का संसाधनों से परिचय करवाने और (उन संसाधनों) के कक्षाओं में प्रयोग के लिए प्रसन्नता से अपनी सहमति दी.

ऐसा हुआ कि वैशाली जिले में, शिक्षकों की मेंटरिंग के लिए अतिरिक्त सहायता के लिए, (कुल मिला के १६ में से) आठ ब्लॉक्स के ने स्वेच्छा से अपनी प्रैक्टिसेज फिल्म कीं.

TESS-India की भागीदारी से पहले, आम तौर पर मेंटरिंग के समय, BRPs की प्रवृत्ति रही थी या तो शिक्षकों को कक्षा के बीच में रोककर बच्चों को अपनी शैली में पढ़ाना शुरू कर देना, अथवा, यदि मेंटरिंग कक्षा के बाद हुई हो, शिक्षकों को अकसर महसूस होता था कि यह एक एकतरफा वार्तालाप था और उनके अनुभवों को नहीं सुना जा रहा था.

CRCCs के साथ वैसी ही प्रैक्टिसेज देखी गयीं.

अपनी सफलता को आगे बढ़ाते हुए, BRPs ने शिक्षकों की मेंटरिंग के लिए TESS-India के संसाधनों के प्रयोग के लिए CRCCs के दिशानिर्देशन का नेतृत्व किया, जिसमे विद्यालयों में हो रहे 'फॉलो-अप' शामिल थे. "शिक्षक की प्रैक्टिसेज का निरीक्षण करने के लिए मैं चुपचाप पीछे वाले दरवाज़े से, बिना किसी के काम में विघ्न डाले, कक्षा में प्रवेश करता हूँ...कक्षा समाप्त हो जाने के बाद मैं पहले उनके अनुभवों को सुनता हूँ, और फिर उन्हें बच्चों की बेहतर सहभागिता के लिए परस्पर-संवादात्मक शिक्षाप्राप्ति के ऊपर परामर्श देता हूँ", एक CRCC, श्री आलोक कुमार ने टिप्पणी की.

मेंटरिंग को एक व्यवस्थित रूप में कार्यान्वित करने के लिए TESS-India ने कक्षा निरीक्षण और कक्षा के बाद 'शेयरिंग' (संवाद) के लिए प्रारूप विकसित कर शिक्षक प्रशिक्षकों की सहायता की. इसके साथ स्टेट कौंसिल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (जो शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में गुणात्मक विकास लाने के लिए बिहार की राज्य सरकार द्वारा मार्च १९८० में स्थापित किया गया था) के सहयोग के साथ, शिक्षकों के लिए पाठ - या यों कहें कि सीखने - के ढाँचे लिखने के लिए एक प्रारूप विकसित किया. हालांकि शुरुआत में उनके उपयोग समझने के लिए शिक्षकों को काफी सहायता की आवश्यकता थी, प्रारूपों को सरल और उपयोगकर्ताओं के अनुकूल सुनिश्चित करना सफल हुआ.

फलस्वरूप, BRPs और CRCCs की मेंटरिंग ज़ारी होने के कारण, शिक्षकों ने अपनी क्षमताओं का विस्तार किया है और अब, उन्होंने जो सीखा उसके लाभों के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं. विशेष रूप से, मुख्य सबक हैं बच्चों के पूर्वज्ञान को जांचने का महत्त्व, नियोजित गतिविधियों का युक्तिकरण, और पाठ तैयार करते समय एक विषय को दूसरे के साथ संयोजित करना.

साथ ही, प्रधानाध्यापकों को नेतृत्व की, और शिक्षकों की सबसे अच्छे तरीके से अकादमिक मेंटरिंग और सहायता करने की, ओर संवेदनशील बनाया गया.

इस समग्र दृष्टिकोण ने समूचे जिले के लिए प्रोत्साहन के रूप में काम किया.

ऐसा हुआ कि हर ब्लॉक ने एक विद्यालय का चयन किया, जो कक्षा के भीतर शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए एक मॉडल के रूप में काम करे, और इस प्रकार व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने में उनकी सहायता करे.

ऐसे व्यावहारिक दृष्टिकोण ने शिक्षा प्रशासकों का ध्यान आकर्षित किया है, और अगला कदम यह सुनिश्चित करना है कि ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर्स (BEO) के द्वारा दी गई सहायता भी इसमें शामिल की जाए.

गतकाल में कक्षा स्तर पर शिक्षकों को मेंटर करना BRPs और CRCCs के प्रैक्टिस के अंतर्गत नहीं आता था. किन्तु अब, शिक्षाप्राप्ति के इस नए तरीके का अर्थ है कि वे शिक्षकों के साथ विशवास के सम्बन्ध स्थापित कर सकने में अधिक सक्षम हैं. वे न केवल वास्तव में अच्छे प्रश्न पूछ सकते हैं, वे खुद अपने उत्तर ढूंढने में शिक्षकों की सहायता भी कर सकते हैं.